दिए। उनके देहावसान के बाद पंडितजी ने न केवल संघर्ष के साथ पढ़ाई पूरी की, बल्कि मेधावी छात्रों में भी रहे। उनके जीवन की बाल्यावस्था से युवावस्था तक बार-बार ऐसा होता रहा मगर इन परिस्थितियों में भी वे शिक्षा में निरंतर अव्वल रहे। सभी विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने अपने सेवाभाव को कायम रखा। महाविद्यालयीन जीवन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भाऊराव देवरसजी के राष्ट्रीय विचार से प्रेरित होकर वह संघ से जुड़ गए। संघ प्रचारक के नाते अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए वह निकल पड़े। प्रचारक जीवन में अपने शांत, संयमित तथा चिंतनशील स्वभाव के कारण उन्हें सभी लोग पसंद करते थे। दीनदयालजी के समाज चिंतन अर्थात एकात्म मानवदर्शनको सामने लाया गया। पंडितजी हमेशा मानवजाति के निर्माण से लेकर निरंतर अविष्कार को लेकर चिंतन करने वाले व्यज़्ति थे। वह कहा करते थे कि सदैव से मानव सुख और आनंद की खोज करता रहा है। मानव के लिए केवल अन्न, वस्त्र आवश्यक नहीं है। मानव शरीर, मन, बुद्धि वाला है तो स्वाभाविक इसका समन्वय रखकर व्यवहार करने की अपेक्षा है। उनका मानना था कि अभिव्यज़्ति जितनी विस्तारित क्षेत्र में जाती है, वह बदलती रहती है और अधिक व्यापक होती है। इसलिए शरीर की आवश्यकताएं पूर्ण करना जितना आवश्यक है उतना ही मन और बुद्धि का विकास करना भी जरूरी है। इन सब में समन्वय बनाकर हम सब चले तो सुख और शांति अनुभव लेना आसान होगा। अर्थात व्यज़्ति, समाज और प्रकृति की मर्यादा में विचार करें तो सब उचित पद्धति से होगा। विविधता को एकता में पिरोने वाले विलक्षण व्यज़्ति के रूप में दीनदयाल उपाध्याय की पहचान थी। वे अपने लिए नहीं जिए, बल्कि भारतमाता के लिए अपना पूरा जीवन न्यौछावर कर दिया। दीनदयालजी का जीवन दिवाली की आतिशबाजी की तरह नहीं था, जो सबको दिखती हैं, पटाखों की तरह भी नहीं था जो सबको जोर से सुनाई देता हैं। किसी देवालय के कोने में जल रही शांत अगरबज़ी की तरह था जो कण-कण जलते हुए सुगन्धित कर देती है। जिस तरह महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण ने दोनों सेनाओं के बीच में खड़े होकर गीता कह दी गई थी ऐसे ही राष्ट्र को जगाने के लिए पंडितजी ने जनसंघ के निर्माण और प्रक्रिया के बीच के चिंतन में से 1964 में एकात्म मानव दर्शन ने जन्म लिया था। इस कथा का आयोजन दीनदयाल शोध संस्थान में 9-10-11 फरवरी 2016 को नई दिल्ली में हुआ। 16-17-18 दिसज़्बर 2016 को समन्वय भवन भोपाल में हुआ। 26-27-28 जून 2017 को रवीन्द्र नाट्यगृह इंदौर में और 24-25 सितज़्बर 2017 को तेरापंथ भवन सभागृह मुज़्बई में हुआ।